

A

(Printed Pages 3)

Roll No._____

AS - 2154

एम. ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) परीक्षा, 2015

संस्कृतम्

(वर्ग-ग)

तृतीयप्रश्नपत्रम्

(शिवाद्वैतं योगदर्शनञ्च)

समय : घंटात्रयम्

पूर्णाङ्कः : 100

निर्देश : पञ्च प्रश्नाः समाधेयाः। प्रथमः प्रश्नोऽनिवार्यः। प्रतिवर्गम्

च एकः प्रश्नोऽवश्यसमाधेयाः।

1. संक्षिप्तटिप्पण्यः लेखनीयाः -

$4 \times 5 = 20$

(क) अभिनवगुप्ताचार्यः

(ख) ईश्वरप्रत्यभिज्ञाकारिका

(ग) आणवमलः

(घ) पञ्चवलेशाः

(ङ) कर्माशयः

P.T.O.

| (2) | | (3) | |
|---|----|---|----|
| प्रथमो वर्ग : | 20 | तृतीयो वर्ग : | 20 |
| 2. विमर्शिनीमनुसृत्य व्याख्या कार्या- | | 6. व्यासभाष्यमनुसृत्य व्याख्या करणीया - | |
| एष प्रमाता शून्यादिः प्रमेये व्यतिरेकिणि। | | (क) शौचसन्तोषतपःस्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः। | |
| माता स मेयः सन्कालादिकपञ्चकवेष्टिः॥ | | (ख) अस्तेयप्रतिष्ठायां सर्वरत्नोपस्थानम् । | |
| 3. विमर्शिनीमधिकृत्य व्याख्या कार्या- | | 7. व्यासभाष्यानुसारेण व्याख्या प्रस्तूयताम् - | |
| त्रयोदशविधा चात्र बाह्यान्तःकरणावली। | | (क) कायेन्द्रियसिद्धिरशुद्धिक्षयात्पसः। | |
| कार्यवर्गश्च दशाथा स्थूलसूक्ष्मत्वभेदतः॥ | | (ख) स्थिरसुखभासनम् । | |
| द्वितीयो वर्गः | 20 | चतुर्थो वर्गः | 20 |
| 4. विमर्शिनीमनुसृत्य व्याख्या करणीया - | | 8. काश्मीरशिवाद्वयवादे प्रतिपादित षट्ट्रिंशत् तत्त्वानां परिचयः | |
| एष प्रमाता मायान्थः संसारी कर्मबन्धनः। | | प्रस्तूयताम्। | |
| विद्याभिज्ञापितैश्वर्यश्चिद्घनो मुक्त उच्यते॥ | | 9. पञ्चयमानां विवेचनं क्रियताम् । | |
| 5. विमर्शिनीटीकानुरोधेन विवेचनीया - | | | |
| देवादीनां च सर्वेषां भविनां त्रिविधं मलम् । | | | |
| तत्रापि कार्ममेवैकं मुख्यं संसारकारणम् ॥ | | | |